International Journal of Innovations in Research
ISSN: 3048-9369 (Online)

भारतीय ज्ञान परंपरा मे स्वस्तिक का सुदूर विस्तार

डॉ सुशील सोमवंशी
सहायक प्राध्यापक *हिन्दी*
शासकीय कमालाराजे कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
ग्वालियर (म.प्र.) **भारत**
ईमेल आईडी: sushil.netam786@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19232658

प्रस्तावना

स्वस्तिक न केवल एक ज्यामितीय आकृति है, बल्कि यह मानव इतिहास की अत्यंत प्राचीनऊर्जा संहिताओं में से एक है। इसकी उत्पत्ति संस्कृत के उपसर्ग 'सु' (कल्याण) और 'अस्ति' (होना) से है। 'सु+अस्ति' का अर्थ है–"सबका कल्याण हो" या "कल्याणकारी अस्तित्व"। भारतीय संस्कृति में स्वस्तिक को मांगलिक चिन्ह माना गया है, जो ऋग्वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक निर्बाध रूप से पूजा, अनुष्ठान और दैनिक जीवन का भाग रहा है। मांगलिक चिन्ह के पीछे छिपे उन रहस्यों को उजागर करना है जो इसे केवल एक धार्मिक चिह्न से ऊपर उठाकर एक ब्रह्मांडीय विज्ञान के रूप में शिखर प्रदान करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

स्वस्तिक की ऐतिहासिकता भारत में सिंधु घाटी सभ्यता से ही प्राप्त होना प्रारंभ हो जाती है। पुरातात्विक खुदाई में मिली मुहरों, बर्तनों ओर भित्तिय चित्रों पर स्वस्तिक की स्पष्ट आकृति मिलती हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि आज से 5000 वर्ष पूर्व भी यह भारतीय ज्ञान का केंद्र थी ।वेदों में स्वस्तिक का सीधा उल्लेख न होते हुए भी 'स्वस्ति-वाचन' के रूप में इसकी उपस्थिति अनिवार्य मानी गई है। ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र:

"स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।"

यह मंत्र कल्याण की उस व्यापक अवधारणा को व्यक्त करता है जिसका मूर्त रूप 'स्वस्तिक' चिह्न है।

कुंजी शब्द – स्वस्तिक, संहिता, सप्तर्षि मंडल, मंत्र, अद्भुत, वसंत, ग्रीष्म, शरद, शिशिर, खगोल

तरीका ओर सामग्री

यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर निर्मित किया गया है। प्रथम स्रोत के रूप में ऋग्वेद संहिता – वैदिक शोध संस्थान तथा द्वितीय स्रोत के रूप में कल्याण (प्रतीक अंक), गीताप्रेस गोरखपुर केआलोचनात्मक ग्रंथों को आधार बनाया गया है। तुलनात्मक अध्ययन, समूह के साथ चर्चा, गुणात्मक ओर मात्रात्मक तरीकों का संयोजन भी शामिल है।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

ज्यामितीय एवं वैज्ञानिक रहस्य

स्वस्तिक की संरचना में गणित और भौतिकी के अद्भुत सिद्धांत परिलक्षित होते हैं:

ध्रुवीय गति और खगोल विज्ञान

खगोलीय शोधों के अनुसार, ध्रुव तारेके चारों ओर सप्तर्षि मंडल की गति वर्ष की चार प्रमुख ऋतुओं (वसंत, ग्रीष्म, शरद, शिशिर) में अलग-अलग दिशाओं में होती है। यदि इन चारों स्थितियों के चित्रों को एक साथ संजोया जाए, तो वह गगन में एक विशाल स्वस्तिक की आकृति का निर्मित करते हैं। अतः स्वस्तिक 'ब्रह्मांडीय समय' का भौतिक प्रतिरूप है।

ऊर्जा का संचरण

स्वस्तिक की चारों भुजाएं 90 अंश के कोण पर झुकी होती हैं। भौतिक विज्ञान के अनुसार, यह संरचना ऊर्जा के 'भंवर' की ओर इशारा करती है। जब हम स्वस्तिक बनाते हैं, तो वह आसपास की नकारात्मक ऊर्जा को केंद्र में खींचकर उसे सकारात्मक ऊर्जा मे परिवर्तित कर चारों दिशाओं में प्रसारित करती है। इसे 'पिरामिड विज्ञान' के बराबर ऊर्जा एकत्रण का यंत्र माना जाता है।

दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विस्तार

स्वस्तिक को भारतीय दर्शन में विभिन्न प्रतीकों का महासंगम माना गया है।

पुरुषार्थ और आश्रम व्यवस्था

स्वस्तिक की चार भुजाएं मानव जीवन के चार स्तंभों को प्रदर्शित करती हैं:

धर्म: नैतिक कर्तव्यों का पालन।
अर्थ: संसाधनों का सही अर्जन।
काम: इच्छाओं का सात्विक उपभोग।
मोक्ष: परम पद की प्राप्ति।

इसी प्रकारयह ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रमों के मध्य संतुलन का प्रतीक है।

विष्णु और लक्ष्मी का संबंध

पुराणों के अनुसार, स्वस्तिक भगवान विष्णु के हृदय पर स्थित 'श्रीवत्स' का रुपक है। माता लक्ष्मी का निवास स्थान भी माना जाता है। स्वस्तिक के केंद्रबिन्दु को 'ब्रह्म-बिंदु' की उपमा दी जाती है, जहाँ से सृष्टि प्रारंभ होती है। चार भुजाएं ब्रह्मा के चार मुखों का भी प्रतीक मानी जाती हैं।

ऊर्जा के दो स्वरूप: दक्षिणावर्ती बनाम वामावर्ती

स्वस्तिक के प्रभाव को समझने के लिए उसकी दिशा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

दक्षिणावर्ती (卐)

यह 'सृष्टि' का रुपक है। यह सूरज की गति के अनुकूल है और जीवन में उन्नति, प्रकाश और सकारात्मकता प्रवाह करता है। इसे 'पुरुष' तत्व का चिन्ह माना जाता है। गृहस्थ जीवन में इसी का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

वामावर्ती (卍)

इसे 'सौवस्तिक' कहा जाता है। यह संहार और विसर्जन का चिन्ह है। तांत्रिक क्रियाओं में, जहाँ अहंकार का नाश करना हो, वहां इसका उपयोग होता है। इसे 'शक्ति' तत्व के विनाशकारी पहलू से जोड़ा जाता है।

नाजी भ्रांति:

२०वीं सदी में हिटलर ने जिस चिह्न का उपयोग किया, वह तिरछा और विकृत था। शोध के अनुसार, बिना केंद्र बिंदु और बिना सही ज्यामिति के प्रयुक्त वह चिह्न विनाश का कारक बना, जिसका भारतीय आध्यात्मिक स्वस्तिक से कोई संबंध नहीं है।

वैश्विक उपस्थिति

स्वस्तिक का विस्तार यह सिद्ध करता है कि यह प्राचीन विश्व का एक 'यूनिवर्सल कोड' था।

चीन में 'वान' (卍)

चीनी बौद्ध परंपरा में इसे 'वान' के रूप मे देखा जाता है। यह बुद्ध के हृदय पर अंकित 'नंद्यावर्त' का रुपक है। चीन के प्राचीन ग्रंथों में इसे 'अनंत काल' और 'दसों दिशाओं के आशीर्वाद' का प्रतीक माना गया है।

जापान में 'मान्जी'

जापानी संस्कृति में 'मान्जी' शांति और संतुलन की आकृति है। समुराई योद्धा अपनी ढालों पर इसे सौभाग्य के लिए चिन्हित किया करते थे। आज भी जापान के मानचित्रों में देवालयों के लिए इसी चिह्न का प्रयोग होता है।

यूनान में 'गामेडियन'

प्राचीन ग्रीक संस्कृति में इसे 'गामेडियन' के रूप मे जाना जाता है । यूनानी दार्शनिक इसे 'चार तत्वों' (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि) का संतुलन बताते थे। यह उनके प्राचीन सिक्कों और मिट्टी के पात्रों पर बहुतायत मात्रा मे मिलता है।

यूरोप और अमेरिका का इतिहास

फाइलफॉट: इंग्लैंड में इसे 'फाइलफॉट' कहा गया, जो समृद्धि का प्रतीक था।

नवाजो जनजाति:

अमेरिका की मूल जनजातियां इसे 'व्हर्लिंग लॉग्स' के नाम से प्रसिद्ध करती है , जो जीवन के चक्र का प्रतिनिधित्व करता था।

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)

वास्तु शास्त्र एवं मनोविज्ञान में उपयोग

वास्तुविज्ञान- जिस घर के प्रमुख द्वार पर स्वस्तिक होता है, वहां नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश होना संभव नहीं है।

रंग का प्रभाव:

लाल रंग का स्वस्तिक (सिंदूर से बना) मंगल ग्रह की ऊर्जा को आकर्षित करता है, जो सुख-समृद्धि की आकृति है।

मनोवैज्ञानिक प्रभाव:

स्वस्तिक का लगातार दर्शन मस्तिष्क में 'अल्फ़ा' तरंगों को सक्रिय करता है, जिससे मानसिक एकाग्रता बढ़ती है।

निष्कर्ष

स्वस्तिक केवल एक रेखाचित्र नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड का लघु रूपहै। यह गणितीय शुद्धता, खगोलीय गति और आध्यात्मिक चेतना का महासंगम है। वर्तमान युग में, जब विश्व अशांति और असंतुलन से जूझ रहा है, स्वस्तिक के 'सु-अस्ति' (सबका कल्याण हो) के संदेश की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। यह शोध सिद्ध करता है कि भारत की प्राचीन ज्ञान ने हजारों वर्ष पूर्व ही उन ज्यामितीय आकृतियों को खोज लिया था जो आज भी विज्ञान और धर्म के लिए आश्चर्य का विषय हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- ऋग्वेद संहिता - वैदिक शोध संस्थान।
- कल्याण (प्रतीक अंक) - गीताप्रेस गोरखपुर।
- The Swastika: The Earliest Known Symbol - Thomas Wilson (Smithsonian Institution).
- Swastika: The Symbol of Good Fortune - Dr. P.K. Agrawal.
- Ancient Symbology in World Civilizations - Comparative Study Archive.

Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0)